नपुंसकादन्यतरस्याम्

यह विधि सूत्र है।

शब्दार्थ है – (नपुंसकाद) नपुंसक से (अन्यतरस्याम्) विकल्प से होता है। किन्तु क्या होता है – यह जानने के लिए 'राजाहः सखिभ्यष्टच्' से 'टच्', 'अव्ययीभावे॰' से अव्ययीभावे, 'अनश्च' से 'अनः' तथा अधिकार सूत्र 'समासान्ताः' की अनुवृत्ति करनी होगी। 'अनः' पद 'नपुंसकाद्' का विशेषण है, अतः उसमें तदन्त-विधि हो जाती है।

'अव्ययीभावे' पञ्चम्यन्त में विपरिणत हो जाता है और अन्नन्त 'नपुंसकाद्' उसका विशेषण बनता है, अतः उसमें भी तदन्त विधि हो जाती है।

इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा –

जिस अव्ययीभाव के अन्त में अन्नन्त नपुंसक (जिसके अन्त में अन् हो) हो, उससे विकल्प से समासान्त 'टच्' प्रत्यय होता है।

उदाहरण – 'चर्मणः समीपम्' (चमड़े के समीप) इस विग्रह में

जैसे 'उपचर्मन्' शब्द में प्रकृत सूत्र से 'टच्' होने पर टिलोप के बाद 'उपचर्मम्' रूप बनता है। 'टच्' के अभाव में 'उपचर्म' रूप होता है।

रूप सिद्धि :—

उपचर्मम्
चर्मणः समीपम् (लौकिक विग्रह)
चर्मन् ङस् उप (अलौकिक विग्रह)

'चर्मणः समीपम्' इस लौकिक विग्रह में 'चर्मन् ङस् उप' ऐसा अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति०' से सामीप्य अर्थ में विद्यमान 'उप' अव्यय का चर्मन् शब्द के साथ समास होने पर
'कृत्तद्धित समासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा
'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से सुप् (ङस्) का लोप

चर्मन् उप

'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से 'उप' की उपसर्जन संज्ञा
'उपसर्जनं पूर्वम्' से पूर्व प्रयोग

उप चर्मन्

~~'अनस्य' से टच् (अ) प्रत्यय उपचर्मन् अ~~

'नपुंसकादन्यतरस्याम्' से विकल्प से होने पर 'उपचर्मन्' शब्द से टच् (अ) प्रत्यय — उप चर्मन् अ
'नस्तद्धिते' से टि (अन्) का लोप होकर उपचर्म् अ = उपचर्म
'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा
'स्वौजसमौट्' से 'सु' विभक्ति — उपचर्म सु
'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा
'अव्ययादाप्सुपः' से 'सु' का लोप प्राप्त होता है, किन्तु उसे बाधकर 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' से 'सु' का 'अम्' आदेश होने पर
'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप होकर 'उपचर्मम्' पद बनता है।

'टच्' के विकल्प पक्ष में 'उपचर्मन्' शब्द से सु आने पर इस शब्द के अदन्त न होने से अमादेश नहीं होता। अतः 'अव्ययादाप्सुपः' से सु का लोप होने पर 'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य' से 'न्' का लोप होकर 'उपचर्म' रूप बनता है।

झयः

यह विधिसूत्र है।
सूत्र का शब्दार्थ है —(झयः) झय से — — ।
किन्तु क्या होता है — इसका पता सूत्र से नहीं चलता।
इसके स्पष्टीकरण के लिए 'राजाहः सखिभ्यष्टच्' से 'टच्' 'अव्ययीभावे ०' से 'अव्ययीभावे' तथा 'नपुंसकादन्यतरस्याम्' से 'अन्यतरस्याम्' की अनुवृत्ति करनी होगी। 'समासान्ताः' का अधिकार है।
'अव्ययीभावे' पञ्चम्यन्त में विपरिणत होता है और सूत्रस्थ 'झयः' उसका विशेषण बनता है। विशेषण होने से उसमें तदन्त विधि हो जाती है।
'झय्' वास्तव में प्रत्याहार है और उसमें सभी वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्णों का ग्रहण होता है।
इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा —
झयन्त अव्ययीभाव (जिसके अन्त में किसी वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय या चतुर्थ वर्ण हो) से विकल्प से समासान्त 'टच्' प्रत्यय होता है।
उदाहरण — 'समिधः समीपम्' इस विग्रह में 'उपसमिध्' शब्द से प्रकृत सूत्र से 'टच्' प्रत्यय होने पर प्रातिपदिकादि कार्य के बाद 'उपसमिधम्' पद बनता है।
'टच्' के विकल्प पक्ष में 'उपसमित्' रूप बनता है।

रूपसिद्धिः — उपसमिधम्, उपसमित
समिधः समीपम् (लौकिक विग्रह)
समिध् ङस् उप (अलौकिक विग्रह)

'समिधः समीपम्' इस लौकिक विग्रह में 'समिध् ङस् उप' ऐसा अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति०' से समीप अर्थ में विद्यमान 'उप' अव्यय का 'समिध्' शब्द के साथ समास होने पर
'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा
'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से सुप् लोप

समिध् उप

'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से 'उप' की उपसर्जन संज्ञा

'उपसर्जनं पूर्वम्' से उसका पूर्व प्रयोग

उप समिध्

'अमः' से समासान्त टच् (अ) होने पर

उपसमिध् अ = उपसमिध

'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा

'स्वौजस०' से सु विभक्ति

उपसमिध सु

'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा

'अव्ययादाप्सुपः' से सु लोप प्राप्त होने पर

'नाव्ययीभावादतोऽत्वसुपञ्चम्याः' सूत्र से 'सु' का 'अम्' आदेश

'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर 'उपसमिधम्' पद बनता है।

'उपसमिध्' शब्द से 'टच्' प्रत्यय के विकल्प पक्ष में 'सु' आने पर 'उपसमिध् सु'

'हलङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' से 'सु' लोप

'झलां जशोऽन्ते' से 'ध्' का 'द्' होने पर

उपसमिद्

'वाऽवसाने' से विकल्प से 'द्' का 'त्' होकर

उपसमित्

और विकल्प पक्ष में 'उपसमिद्' रूप बनते हैं।